नोडल अधिकारी द्वारा

:: पृष्ठ भूमि एवं आभार ::

पाठ्यचर्या एक दिशा एवं साधन हैं जिसका अनुसरण करके शिक्षा के लक्ष्यो ंको प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। पाठ्यचर्या किसी भी संस्थान की शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु होता है। कक्षा की समस्त क्रियाएं, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ तथा मूल्यांकन की समस्त प्रक्रिया पाठ्यचर्या के परिणामस्वरूप ही नियोजित किये जाते है। पाठ्यक्रम केवल शिक्षण विषयों तक ही सीमित नहीं होता है बल्कि संस्था मे ंनियोजित एवं सपांदित सभी क्रियाओं को इसमे ंसम्मिलित किया जाता है जो तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्र/छात्राओं के विकास में सहायक होती है।

नवीनतम मॉग के अनुसार पाठ्यचर्या निर्माण एक विशेष प्रकार का कार्य हैं। पाठ्यचर्या निर्माण मे ंप्राप्त किए जाने वाले उद्देश्यो ंतथा दिये जाने वाले अधिगम अनुभवों और पाठ्यचर्या के क्रियाकलापों द्वारा लाए जाने वाले परिवर्तनो ंके मूल्यांकन आदि को पाठ्यचर्या निर्माण के समय ध्यान मे ंरखा गया है।

पाठ्यचर्या निर्माण हेतु प्रकोष्ठ का प्रथम सोपान ''विभिन्न उद्योगो का विश्लेषण एवं उनकी नवीनतम मॉग का ऑकलन '' करना था। इस सोपान के बिना पाठ्यचर्या का स्वरूप तथा अन्य सोपानो ंका सपांदन नहीं किया जा सकता है। अतः उक्त कार्य के लिये प्रकोष्ठ द्वारा विभिन्न उद्योगो से विशेषज्ञों को कार्यशालाओं में आमंत्रित कर उनसे साथ विषय विशेषज्ञों के साथ परामर्श कर उद्योगो का विश्लेषण किया गया तथा वर्तमान में उद्योगो की नवीनतम मॉगों का ऑकलन किया गया।

प्रकोष्ठ का पाठ्यचर्या निर्माण के दौरान द्वितीय सोपान पाठ्यचर्या के उद्देश्यों का चयन करना था। तकनीकी शिक्षा के लिए उद्देश्यों को पहचानने का अर्थ था, अपेक्षित उद्देश्यों का प्रतिपादन करना एवं उददेश्यो ं के प्रतिपादन में ज्ञानात्मक विकास, भावात्मक विकास, क्रियात्मक विकास, सामाजिक विकास तथा शारीरिक विकास जैसे स्त्रोतों का उपयोग किया जाना। क्योकि पाठ्यचर्या का निर्माण विशेष स्तर के छात्रों के लिए किया जाना था तथा इसके विशिष्ट प्रारूप को देखते हुये उद्देश्यों का चयन करके व्यवहारिक रूप मे लिखा गया है।

नवीन पाठ्यक्रम में अधिक से अधिक तथ्यों को सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है। इसलिए पाठ्यवस्तु के स्वरूप को विकसित करने में इन मानदंडों को ध्यान मे ंरखना, वैधता का मानदंड, महत्व का मानदंड, अभिरूचि का मानदण्ड तथा सीखने का मानदण्ड एक चुनौती था तथा प्रकोष्ठ द्वारा इसे पाठ्यक्रम में कार्यान्वित भी किया गया है।

किसी शैक्षणिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता इस बात से ज्ञात की जा सकती है कि निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है। अतः तैयार की गई नवीन पाठ्यक्रम में प्रकोष्ठ द्वारा उपयुक्त मूल्यांकन विधियों का समावेश किया गया है।

पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों–उद्देश्य, विषय वस्तु, विधियों आदि की जाचं पाठ्यचर्या मूल्यांकन द्वारा की जाती है। पाठ्यचर्या का प्रत्येक घटक दूसरे घटक से जुडा होता है तथा ये घटक एक दूसरे से प्रभावित होते हैं तथा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं अतः पाठ्यक्रम में प्रत्येक घटक का मूल्यांकन दूसरे घटकों के साथ जोड़कर किया गया है। इसके अतिरिक्त मौखिक, लिखित या प्रायोगिक परीक्षण, अलग–अलग प्रकार के लिखित कार्यों, प्रश्नों या चर्चा द्वारा किये जाने का प्रबंन्ध भी पाठ्यक्रम में किया गया है।

पाठ्यचर्या परीक्षण एक रचनात्मक मूल्यांकन होता है जो पाठ्यचर्या विकास की प्रत्येक अवस्था अर्थात् प्रत्येक सोपान के अंत में किया जाता है। इस मूल्यांकन का उद्देश्य पाठ्यचर्या के विकास तथा नियोजन के दौरान उसके प्रत्येक घटक में सुधार लाना है। पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया के दौरान अनेक महत्वपर्ण बिन्दुओ का परीक्षण किया गया है, जैसे विषयवस्तु छात्रों के अधिगम के लिए उपयुक्त है या नहीं ? मूल्यांकन से प्राप्त परिणाम के आधार पर विषय वस्तु मे परिवर्तन किया जा सकता है।

संयुक्त प्रवेश परीक्षा एवं प्रशिक्षण,अनुसंधान विकास प्रकोष्ठ द्वारा प्रयास किया गया है कि पाठ्यचर्या विकास में अनुपालित एवं प्रचलित सिद्धान्तों के अनुसार ही पाठ्यचर्या को अंतिम रुप दिया जाये।

मैं पाठयचर्या विकास में विगत वर्षो से निरन्तर मेरे साथ कार्य कर रहे संयुक्त प्रवेश परीक्षा एवं प्रशिक्षण, अनुसंधान विकास प्रकोष्ठ से श्री सुनील कुमार,सहायक सचिव,श्री ए0के0श्रीवास्तव,सम्बद्ध अधिकारी,श्री मनोज कुमार सिन्हा, सम्बद्ध अधिकारी एवं श्री गौतम कुमार,डेटा इन्ट्री ओपरेटर को धन्यवाद देना चाहुगा,जिनके विशेष प्रयासों एवं सहयोग के बिना पाठयचर्या विकास के कार्य को किया जाना एवं अंतिम रुप दिया जाना सम्भव नही था।

मै संयुक्त प्रवेश परीक्षा एवं प्रशिक्षण,अनुसंधान विकास प्रकोष्ठ के संयुक्त सचिव डा0मुकेश पाण्डेय जी का विशेष आभार व्यक्त करना चाहूगा,क्योकि उनके रचनात्मक सुझावों के बिना पाठयचर्या को अंतिम रुप दिया जाना सम्भव नही था।

मैं इसके अतिरिक्त पाठयचर्या विकास हेतु महत्वपूर्ण सुझावों एवं बहुमूल्य सहयोग हेतु निम्न का आभार व्यक्त करना हूँ–

1.श्री ओम प्रकाश,अपर मुख्य सचिव,तकनीकी शिक्षा,उत्तराखण्ड,शासन।
2.श्री अशोक कुमार, सचिव,तकनीकी शिक्षा,उत्तराखण्ड,शासन।
3.डा0अहमद इकबाल,निदेशक,प्राविधिक शिक्षा,उत्तराखण्ड।
4.श्री हरि सिंह,सचिव,उत्तराखण्ड,प्राविधिक शिक्षा परिषद।
5.श्री आर0पी0गुप्ता, अपर निदेशक,प्राविधिक शिक्षा,उत्तराखण्ड।
6.श्री देशराज,संयुक्त निदेशक,प्राविधिक शिक्षा,उत्तराखण्ड।
7.श्री सुरेश कुमार,उप सचिव, प्राविधिक शिक्षा,उत्तराखण्ड।